ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(6): 363-365
www.allresearchjournal.com
Received: 16-05-2018
Accepted: 22-06-2018

पल्लवी रिनाहिते
शोध छात्रा, हिन्दी विभाग, गुरू घासीदास केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

डॉ. रमेश कुमार गोहे
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, गुरू घासीदास केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

Correspondence
पल्लवी रिनाहिते
शोध छात्रा, हिन्दी विभाग, गुरू घासीदास केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

उदय प्रकाश के रचनाकर्म की सामाजिक प्रतिबद्धता

पल्लवी रिनाहिते और डॉ. रमेश कुमार गोहे

प्रस्तावना

उदय प्रकाश का रचनाकर्म उनके आचार–विचार का एकाकार प्रतिबिम्ब है। जैसा उनका साहित्य है वैसा ही उनका जीवन न कोई बनावट, न कोई ईर्ष्या, न लालच एवं लोभ की कोई आँख–मिचौली। सब कुछ सीधा–साधा देशज ढंग से सच को सच एवं झूठ को झूठ कहने की अपार साहसिकता। यही बात उन्हें अन्य रचनाकारों से अलग स्थान देती है। उदय जी एक कुशल कहानीकार, अनुवादक, फिल्मकार होने के साथ उम्दा कवि भी है। वे स्वयं को मूलतः कवि स्वीकार करते हैं। ओम निश्छल से हुई बातचीत में वे कहते हैं – ''ओम जी मैं मूलत कवि हूँ। इसको मैं भी जानता हूँ और बाकी सब भी। मैं तो अक्सर मजाक में कहा करता हूँ कि मैं एक ऐसा कुम्हार हूँ, जिसने धोखे से एक कमीज सिल दी, अब सब उसे दर्जी कह रहे हैं। सच तो यह है कि मैं दरअसल कुम्हार ही हूँ।''[1] एक कवि के रूप में वे अपने कविता संग्रह 'सुनो कारीगर' (1980), 'अबूतर–कबूतर'(1984), रात में हारमोनियम (1988), एक भाषा हुआ करती है (2009) के माध्यम से समकालीन हिन्दी कविता में सशक्त उपस्थिति दर्ज कराते हैं। उदय जी की कविताएँ समकालीन भारतीय समाज के जीवन संघर्षो का जीवंत दस्तावेज है तथा जीवन में जो कुछ भी सुन्दर एवं कोमल है उसे बचाये रखने का सतत प्रयास भी है। उनका लेखन हर उस आदमी के पक्ष में खड़ा है जो शोषित एवं उपेक्षित है। चाहे वह स्त्री, श्रमिक, दलित या आदिवासी वर्ग हो। उनकी यही विशेषता उन्हें जनपक्षधरता से जोड़ देती है। ऐसे उम्दा कवि के कविता कर्म को समझने का प्रयास हम यहां करेंगे।

उदय प्रकाश की कविताएँ हमारे चारो ओर फैले गहरे अंधेरे और कालेपन के बीच जो उजाले की चमक तथा जीवन का सौन्दर्य है उसे प्रतिबिम्बित करती है। और सबसे अच्छी बात मुझे यह लगती है कि वह हमारे समय और समाज के अंधेरे पक्ष को दिखाते हुए हमें बीच में नही छोड़ती बल्कि उससे बाहर निकालने का उद्यम भी करती है।

''चलने से पहले
एक बार और पुकारो मुझे
मैं तुम्हारे साथ हूँ
तुम्हारी पुकार की उँगलियां थाम कर
चलता चला आऊँगा
तुम्हारे पीछे–पीछे
अपने पिछले अन्धेरे को पार करता हुआ।''[2]

वे कविताएँ परिवर्तन की एक गहरी उम्मीद लाती हुई अवसाद एवं निराशा के गर्त में पड़े हुए आदमी में एक नया उजास भर देती है। उदय जी के पास कविता की एक अपनी जमीन है और प्रतिरोध की एक सशक्त विरासत भी जो स्वतः ही उन्हें पीड़ित एवं दमित वर्ग की चेतना से जोड़ देती है। जनप्रतिबद्ध कवि के रूप में जनता के पक्ष में खड़े होकर वे अंधकार की सत्ता की ओर संकेत ही नहीं करते बल्कि जनता को सजग करते हैं। हर उस चीज पर चोट करते हैं जो हमें गुलाम बनाती है हमारे जीवन की गरिमा को नष्ट करती है।

''मैं ठीक कह रहा हूँ मालिक
आप नाहक ही नाराज हैं
भूल जाइये बिल्कुल उन चीजों को जिन पर हुक्म नहीं चलता आपका
आखिर हवा किसनिया कहारिन तो है नहीं मालिक, जो कहराती हुई
चौंका–बासन करे आपका

बाल्टी भर–भर पानी
छत तक चढ़ाए
दो घण्टे छोटे बाबू को बहलाए
और फिर आपका
बिछौना बिछाए''[3]

इस कविता के माध्यम से कवि बदलाव की ओर संकेत कर रहा है और यह बताना चाह रहा है शोषण की नींव पर आधारित उनकी यह इमारत जल्द ही ढ़हने वाली है। एक नयी समता आधारित व्यवस्था का वह समर्थन करता है।

वे जिस तरह से साधारण से साधारण व्यक्ति, वस्तु, जीव–जंतु या घटना को अपनी कविता में विशिष्ट एवं असाधारण बना देते है, वह अदभुत होता है। हम यह सोच भी नहीं सकते कि ये कविता के वर्ण्य विषय हो सकते हैं। उदय जी के पास ऐसी कविताओं की एक पूरी श्रृँखला उपस्थित है। जिसमें जीवन की छोटी–छोटी चीजों में छुपी भव्यता एवं सौन्दर्य के विराट दर्शन होने हैं। एक साधारण से श्रमिक के जीवन और उसकी संवेदना से जुड़ते हुए 'ईमारत' कविता में वे बताते हैं, उसके श्रम की आवश्यकता तो सबको होती है पर उसे उसका उचित मूल्य और सम्मान कभी नहीं मिलता। उनकी स्थिति के बदलाव व जीवन की किन बुनयादी परेशानियों से वह जूझ रहा है इस बारे में कोई नहीं सोचता। लेकिन कवि उम्मीद नहीं छोड़ता उसका विश्वास है कि एक दिन व्यवस्था बदलेगी और कारीगर के जीवन में परिवर्तन आएगा।

''कारीगर के शरीर में
जगह–जगह जख्म पक रहे हैं
इसलिए इमारत की दीवालों में
दरारें पड़ गयी हैं
और नींव दीमक चाट रहे हैं
कारीगर बूढ़ा हो गया है
उसके बाल झड़ रहे हैं
इसलिए ईमारत के प्लास्टर उखड़ रहे हैं
x x x x x x x x x x x x x x x x x x x
नहीं जानता इंजीनियर
या जानता है
कि इमारत हिल रही है
जोर–जोर से
क्योंकि तीन सौ मिल दूर
गाँव में अपनी झिलंगी खटिया पर
पड़ा हुआ कारीगर
खाँस रहा है जोर जोर से।''[4]

उदय जी के ये प्रतिबद्धताएं ही उन्हें विशिष्ट बनाती हैं। उनके पास अपने अनुभवों का ठोस संसार है जिसमें गहरे डूबकर उनकी काव्य–संवेदना अपूर्व संतुलन के साथ पेश आती है। भारतभूषण अग्रवाल पुरस्कार प्राप्त 'तिब्बत' जैसी गंभीर कविता उनके स्मृतियों, बचपन की घटनाओं एवं अनुभवों की उपज है। जब उन्होंने बचपन में पहली गाँव में आए हुए 'लामाओं' का देखा था। पिता ने उन्हें बताया था लामाओं के गाँव 'तिब्बत' पर चीन ने हमला कर दिया था और वे वहाँ से भागकर शरणार्थियों के तौर पर यहाँ आ गये हैं और वे लोग जहाँ बसने जा रहे थे वह था छत्तीसगढ़ अंचल का मेनपाट। अचानक एक दिन किसी लामा की मृत्यु हो जाती है। उसका अंतिम संस्कार लेखक के घर के निकट सोन नदी में किया जाता है। लेखक अपने अनुभव संसार को व्यक्त करते हुए कहता है – ''मैं नहीं जानता लामा मृतक का अंतिम संस्कार किस प्रकार करते हैं, उसे दफनाते हैं, जलाते हैं, पारसियों की तरह शव को छोड़ देते हैं, या नदी में बहा देते हैं। लेकिन मुझे इतना जरूर लगता है कि अपने घर और देश से हजारों मील दूर जब कोई तिब्बती किसी और पराये देश में मरता है तो अंतिम संस्कार के समय लामा जो प्रार्थना करते हैं या मंत्र पढ़ते हैं, तो वो असल में ध्यान से सुना तो, और कुछ नहीं, एक विलाप जैसा कुछ होता है। बहुत मार्मिक, भीतर तक बेध डालने वाला। व्याकुल कर देने वाला।''[5] इस कविता में एक अबोध बालक के द्वारा लामाओं (तिब्बतवासियों) की पीड़ा को सहज एवं आत्मीय ढ़ग से व्यक्त किया हैं वह बालक कोई और नहीं बल्कि स्वयं उदय प्रकाश है। अद्भूत मासूमियत के साथ भरा है यह कवि सदैव 'हजार जुल्म सताए' लोगों के साथ खड़ा रहा है। एक कवि का इससे बड़ी उपलब्धि क्या हो सकती है ?

तिब्बत से आए हुए
लामा घूमते रहते हैं
आजकल मन्त्र बुदबुदाते
उनके खच्चरों के झुंड
बगीचों में उतरते हैं
गेंदे के पौधों को नही चरते
गेंदे के एक फूल में
कितने फूल होते है
पापा?
तिब्बत में बरसात
जब होती है
तब हम किस मौसम में होते है?
जब लोग मर जाते हैं
तब उनकी कब्रों के चारों ओर
सिरझुका कर
खड़े हो जाते हैं लामा
वे मंत्र नहीं पढ़ते
वे फुसफुसाते हैं –तिब्बत
तिब्बत–तिब्बत
तिब्बत–तिब्बत
और रोते रहते हैं
रात–रात भर।''[6]

इस प्रकार कवि की सामाजिक प्रतिबद्धता इस कविता के माध्यम और भी अधिक विश्वसनीय एवं मुखर हो उठी है। ज्योतिष जोशी का इस सम्बन्ध में कथन है –''उदय प्रकाश की कविता की सामाजिक प्रतिबद्धता जो इस कविता के माध्यम से पहले के मुकाबले अधिक प्रासंगिक हो उठी है। चीन के बढ़ते अत्याचार के कदमों तले तिब्बत की जनता के संघर्ष और उनके सहिष्णु प्रतिरोध को आजतक इतनी कुशलता एवं आत्मीयता के साथ किसी ने भी व्यक्त नहीं किया।''[7]

उदय जी कविता का फलक बहुआयामी है वह किसी एक निश्चित परिपाटी में बंधी है। स्त्री जीवन उनकी कविता का एक महत्वपूर्ण पक्ष है जिसे व्यक्त किए बिना अपनी बातों को विराम नहीं दिया जा सकता है। 'नींव की ईंट हो तुम दीदी' कविता की ये पंक्तियां कवि का बहन के प्रति आत्मीय सम्बन्ध को उजागर करती हैं।

''ढ़िबरी थी दीदी तुम
हमारे बचपन की अचार का तलछट तेल
अपनी कपास की बाती में सोखकर
जलती रहीं।
हमने सीखे पहले–पहले अक्षर
और अनुभवों से भरे किस्से
तुम्हारी उजली साँस के स्पर्श में।
जलती रहीं तुम
तुम्हारा धुआँ सोखती रहीं
घर की गूंगी दीवारें

छप्पर के तिनके–तिनके
धुँधले होते गए
और तुम्हारी
थोड़ी सी कठिन रोशनी में
हम बड़े होते गये।''[8]

माँ एवं पिता की मृत्यु के पश्चात दीदी ही वो आसरा थी जिसकी छत्र–छाया में वो पले–बढ़े थे। इसके अलावा में दो अन्य कविताएं 'औरत' और 'पंचनामों मे जो दर्ज नहीं हैं' स्त्री जीवन की विडम्बना एवं पीड़ा को तीव्रता से उभारती है। ऐसा लगता है मानो कवि ने अपना हृदय बाहर निकाल कर रख दिया हो।

''एक औरत हार कर कहती है – तुम जो जी आये,
कर लो मेरे साथ
बस मुझे किसी तरह जीने लेने दो
एक पायी गयी है मरी हुई बिल्कुल तड़के शहर के किसी पार्क में
और उसके शव के पास बैठा रो रहा है उसका डेढ़ साल का बेटा
उसकेझोले में मिलती है दूध की खाली बोतल, प्लास्टिक का छोटा सा गिलास
और एक लाल–हरी गेंद हिलाने से आवाज भी आती है घुनघुने जैसी आवाज।''[9]

निष्कर्षतः

हम यह कह सकते हैं। उदय जी की कविता जनवादी सरोकारों से जुड़ी हुई कविता है जिसमें सामाजिक चिंतन प्रतिफलित होता दिखाई पड़ता है। उनकी कविताएं बड़े सहज एवं सरल अंदाज में अपने छोटे–छोटे कथ्यों के माध्यम से बड़ी–बड़ी बाते कह जाती है। ऐसी बातें जिसमें वर्तमान एवं भविष्य की गहन चिंताए हैं। सूक्ष्मता से अवलोकन किया जाय तो यह स्वतः ही स्पष्ट हो जाता है कविताएँ उनकी आत्म की उपज है इसलिए उसमें एक सहजता एवं अनिवार्यता दिखलायी पड़ती है।

इस सम्बन्ध (संदर्भ) में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का यह कथन उल्लेखनीय है –''सादगी उदय प्रकाश की कविताओं की जान है जो हर उस आदमी से रिश्ता कायम कर लेती है जो सामाजिक अन्याय और शोषण की मार उन लोगों के बीच बैठा सह रहा है, जिनके पास आंदोलन एवं नारे नहीं है सिर्फ खाली होने का अहसास भर है.....। ये कविताएं पाठक की संवेदना में बहुत कुछ ऐसा तोड–फोड़ कर जाती है, जिसके सहारे वह बहुत कुछ नया रचने की जरूरत महसूस करने लगता है किसी यातना को कवि बिना उस यातना से मानसिक रूप से गुजरे हुए नहीं प्रेषित कर सकता। उदय प्रकाश की कविताएं काफी कुछ इसकी दुर्लभ मिसाल है।''[10]

संदर्भ ग्रंथ

1. अपनी उनकी बात – उदय प्रकाश, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण 2013, पृष्ठ सं. 130–131
2. सुनो कारीगर – उदय प्रकाश, वाणी, प्रकाशन, नयी दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2007, पृष्ठ सं. 11
3. वही, पृष्ठ सं. 42
4. वही, पृष्ठ सं. 18 – 19
5. प्रतिलिपि–कविता और देश के दरबदर उदय प्रकाश, आजादी विशेषांक, अंक 13
6. सुनो कारीगर – उदय प्रकाश, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2007, पृष्ठ सं. 88–89
7. सृजनात्मकता के आयाम–ज्योतिष जोशी, नयी किताब प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण 2013 पृष्ठ सं.–5
8. अबूतर–कबूतर उदय प्रकाश, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2005, पृष्ठ सं. 14–15
9. रात में हारमोनियम–उदय प्रकाश, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2009, पृष्ठ सं. 32
10- अबूतर–कबूतर–उदय प्रकाश (फ्लैप से सर्वेश्वर दयाल सक्सेना), वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण 2005